



## भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस और मीडिया का योगदान: 1900 से 1947 तक का विश्लेषण

<sup>1</sup>Kunwer Vikram Singh and <sup>2</sup>Dr. Babu Ram Maurya

<sup>1</sup>Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

<sup>2</sup>Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20133752>

Corresponding Author: Kunwer Vikram Singh

### सारांश

मद्रास प्रेसीडेंसी और मध्य प्रांतों में रहने वाले उड़िया लोगों को भी ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा, जहाँ स्कूलों में क्रमशः हिंदी और हिन्दी का बोलबाला था और उड़िया बच्चे वंचित थे। शिक्षा की कमी के कारण उड़िया बेरोजगार रह गए और उन्हें दूसरे दर्जे के नागरिक के रूप में माना गया। उन्हें अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाएँ सीखने के लिए मजबूर किया गया। अंग्रेजों के आने से पहले उड़ीसा लंबे समय तक अफगान, मुगल और मराठा शासन के अधीन रहा, जब 1568 में अंतिम स्वतंत्र हिंदू राजा मुकुंद देव की मृत्यु हो गई। इन दुष्ट शासकों के हाथों लंबे समय तक दमन, अभाव को अंग्रेजों ने 1803 में उड़ीसा पर कब्जा करने के बाद और भी बदतर बना दिया। दुर्भावनापूर्ण और भाड़े के ब्रिटिश शासन के तहत उड़ीसा को टुकड़ों में विभाजित किया गया था और उन्हें अलग-अलग प्रांतों के उपांग के रूप में टैग किया गया था।

**मूल शब्द:** उड़िया, मातृभाषा, उड़ीसा, मीडिया, ब्रिटिश।

### प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ एक बहुआयामी आंदोलन था, जो 19वीं सदी के अंत से लेकर 1947 में भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने तक कई दशकों तक चला। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के बारे में बढ़ती जागरूकता में निहित, इस संघर्ष की विशेषता विविध रणनीतियों और विचारधाराओं से थी। शुरुआती प्रतिरोध का पता 1857 के सिपाही विद्रोह जैसे विद्रोहों से लगाया जा सकता है, जिसने ब्रिटिश सत्ता के लिए एक महत्वपूर्ण, यद्यपि असफल, चुनौती पेश की।

स्थानीय शिकायतों और राष्ट्रवादी भावना दोनों से प्रेरित इस विद्रोह ने स्वतंत्रता के लिए एक अधिक संगठित और व्यापक आंदोलन के लिए मंच तैयार किया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) और 1906 में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग जैसे प्रमुख राजनीतिक संगठनों के उदय ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई को औपचारिक रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संस्थाओं ने राजनीतिक विमर्श के लिए एक मंच प्रदान किया, जिससे विभिन्न समुदायों की आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए विभिन्न आवाजों को अनुमति मिली। 20वीं सदी की शुरुआत में, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बाद में महात्मा गांधी

सहित नेताओं की एक नई लहर ने स्वशासन प्राप्त करने के लिए अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोणों की वकालत करना शुरू कर दिया। गांधी के अहिंसा और सविनय अवज्ञा के दर्शन ने व्यापक समर्थन प्राप्त किया और सामूहिक कार्रवाई के महत्व पर जोर दिया। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) की पृष्ठभूमि और उसके बाद भारत के सामने आई सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों, जिसमें आर्थिक तनाव और 1919 का दमनकारी रौलेट अधिनियम शामिल है, ने असंतोष को और बढ़ा दिया। 1919 का अमृतसर नरसंहार, जिसमें ब्रिटिश सैनिकों ने सैकड़ों निहत्थे भारतीय नागरिकों को मार डाला, एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया, जिससे भारतीय राष्ट्रवादियों में उग्रवाद बढ़ गया। जैसे-जैसे संघर्ष विकसित हुआ, इसने असहयोग आंदोलन (1920-1922) सहित विभिन्न आंदोलनों का उदय देखा, सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934) और 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन, प्रत्येक में ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ जन आंदोलन और नागरिक प्रतिरोध की झलक मिलती है। इस उथल-पुथल भरे दौर में, प्रेस संचार और लामबंदी के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरा। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने राष्ट्रवादी विचारों को फैलाने, औपनिवेशिक अत्याचारों की रिपोर्टिंग करने और जन भावना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रेस और स्वतंत्रता संग्राम के बीच यह परस्पर क्रिया यह समझने के

लिए महत्वपूर्ण है कि जनमत को कैसे तैयार किया गया और इसने आंदोलन की दिशा को कैसे प्रभावित किया।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में, प्रेस जनता की आवाज़ को बुलंद करने और सरकारी कार्रवाइयों पर प्रकाश डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, एक महत्वपूर्ण प्रहरी के रूप में कार्य करता है, जिसका काम सरकार के कामकाज की जांच करना और किसी भी राज्य के अभिनेताओं द्वारा किए गए किसी भी कथित अन्याय या कमियों पर ध्यान आकर्षित करना है। हालाँकि, हाल ही में जारी विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक भारत के लिए एक चिंताजनक तस्वीर प्रस्तुत करता है। हाल ही में जारी विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की रैंकिंग -180 में से 159वीं है, जो चिंताजनक है, खासकर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में इसकी स्थिति को देखते हुए। हालाँकि रैंक में थोड़ा सुधार हुआ है, लेकिन यह प्रगति के कारण नहीं बल्कि अन्य देशों में प्रेस की स्वतंत्रता में गिरावट के कारण है।

भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए चुनौती में मीडिया का कुछ व्यक्तियों या संस्थाओं के हाथों में केंद्रित होना शामिल है और मीडिया के स्वामित्व से दृष्टिकोणों में विविधता की कमी हो सकती है और विशिष्ट आख्याओं या एजेंडों का संभावित प्रभुत्व हो सकता है और आवाज़ों की बहुलता सीमित हो सकती है, जिससे पत्रकारों की स्वतंत्र रूप से रिपोर्ट करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न हो सकती है। प्रेस ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने शुरुआती दिनों से ही यह संचार, विचारों के प्रसार और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जनता को संगठित करने का एक शक्तिशाली साधन रहा है। विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से, प्रेस ने भारतीयों के बीच राष्ट्रीय पहचान और एकता की भावना पैदा करने में मदद की, जिससे यह स्वतंत्रता की लड़ाई का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया। यह लेख भारतीय इतिहास में इस परिवर्तनकारी अवधि के दौरान प्रेस के महत्वपूर्ण योगदान का पता लगाता है।

## साहित्य की समीक्षा

शिवानंद एट अल (2025) <sup>[1]</sup> भारत के गौरवशाली स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों और धाराओं में पारंपरिक लोक मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शोषणकारी औपनिवेशिक शासन, आधुनिक बुनियादी ढांचे और उद्योग की अपर्याप्तता और औपचारिक शिक्षा और शहर-आधारित जनसंचार माध्यमों के आधुनिक संस्थानों की कमी के कारण, 18वीं और 19वीं शताब्दियों के दौरान भारत में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पहुंच और प्रभाव बहुत सीमित था। भारतीय भाषाओं में सांस्कृतिक प्रवचन, लोक रंगमंच, लोकगीत, कथात्मक लोक रूप, लोककथाएँ और कठपुतली जैसे पारंपरिक लोक मीडिया के विभिन्न रूपों के साथ आम लोगों का जुड़ाव और स्वाभाविक जुड़ाव व्यापक रूप से पहचाना जाता है। ये लोक मीडिया रूप सांस्कृतिक रूप से भारतीय लोगों की आकांक्षाओं और वास्तविक जीवन के अनुभवों, उनके त्योहारों, अनुष्ठानों, रीति-रिवाजों, कला रूपों, संगीत, साहित्य, दार्शनिक प्रणालियों और सामूहिक चेतना से जुड़े हुए हैं। इन सभी ने आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की अंतर्धाराओं के निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभाई। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रोटी और कमल, महाराष्ट्र में गणेश पूजा और शिवाजी जयंती उत्सव और गांधीजी की पार्थ सभा के बिना भारत के स्वतंत्रता संग्राम की कल्पना नहीं की जा सकती। भारत में मीडिया और संचार के इतिहास का यह पहलू अभी भी काफी हद तक अलिखित है। चल रहे आज़ादी के अमृत महोत्सव के

दौरान भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पारंपरिक लोक मीडिया की भूमिका पर शोध करना, उसे रिकॉर्ड करना और उसे उजागर करना मूल्यवान है। प्रस्तावित अध्ययन भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पारंपरिक लोक मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाने और उसका वर्णन करने का एक विनम्र प्रयास है। व्यापक व्याख्यात्मक प्रतिमान के भीतर, यह एक ऐतिहासिक शोध कार्य होगा जिसमें अभिलेखागार, प्रासंगिक ऐतिहासिक दस्तावेज़, साक्षात्कार और संबंधित संस्थानों जैसे कि IGNCA, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के गीत और नाटक प्रभाग और संगीत नाटक अकादमी के अन्य संसाधनों का अध्ययन शामिल होगा।

देबब्रत एट अल (2019) <sup>[2]</sup> सार देबब्रत रॉय लोकतंत्र में प्रेस की भूमिका और महत्व सर्वविदित है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(ए), जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, उसके दायरे में प्रेस की स्वतंत्रता भी शामिल है। स्वतंत्र, स्वतंत्र और शक्तिशाली मीडिया का अस्तित्व लोकतंत्र की आधारशिला है, खासकर भारत जैसे अत्यधिक मिश्रित समाज की। मीडिया न केवल अपने विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है, बल्कि यह क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंडों के विभिन्न विषयों पर जनमत बनाने के लिए भी जिम्मेदार है। आज की वैश्वीकृत और तकनीक-प्रेमी दुनिया में मीडिया की बढ़ती भूमिका को संयुक्त राज्य अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति हैंड के शब्दों में सटीक रूप से व्यक्त किया गया था, जब उन्होंने कहा था, "जो हाथ प्रेस, रेडियो, स्क्रीन और दूर-दूर तक फैली पत्रिका पर शासन करता है, वह देश पर शासन करता है"। लोकतंत्र लोगों का शासन है। एक ऐसी प्रणाली जिसके तीन मजबूत स्तंभ हैं। लेकिन आज भारतीय समाज अपने तीनों अंगों- कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका- पर कुछ हद तक अस्थिर हो गया है, अनुच्छेद 19 (1) (ए) की गारंटी ने चौथे स्तंभ यानी मीडिया को जन्म दिया है। मीडिया की इस बढ़ी हुई भूमिका के साथ, रिपोर्टिंग में इसकी जवाबदेही और व्यावसायिकता की आवश्यकता पर पर्याप्त जोर नहीं दिया जा सकता है। एक नागरिक समाज में स्वतंत्रता के किसी भी अधिकार को निरपेक्ष नहीं माना जा सकता है। मीडिया की स्वतंत्रता को उचित सीमाओं के भीतर ही प्रयोग किया जाना चाहिए। बड़ी शक्ति के साथ बड़ी जिम्मेदारी भी आती है। इसी तरह, अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत स्वतंत्रता किसी भी कानून का उल्लंघन न करने के कर्तव्य से संबंधित है। यह शोधपत्र हमारे देश में प्रेस और मीडिया की भूमिका को पहचानने और उनके कार्य के उन क्षेत्रों को उजागर करने का एक प्रयास है जहाँ कानूनी विनियमन की आवश्यकता है। मुख्य शब्द: स्वतंत्रता, प्रेस, मीडिया, उचित प्रतिबंध, कानून का विनियमन।

विजयता एट अल (2024) <sup>[3]</sup> ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' एक क्लासिक है, जिसे भारत का हर नागरिक स्वतंत्रता की पूर्व संध्या से जोड़ता है। स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान, आम आदमी का साहस और एकता की ताकत इस मील के पत्थर की उपलब्धि में योगदान देने वाले मुख्य कारक थे। इस दिन पर भारतीय दृष्टिकोण एक स्वतंत्र गणराज्य होने की भावना से संबंधित है, लेकिन दुनिया इस विशेष दिन को विभिन्न दृष्टिकोणों से मनाती दिखी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित ग्रंथों में प्रेस के योगदान का उल्लेख महत्वपूर्ण रहा है, लेकिन भारत के साथ-साथ बाहरी दुनिया के समाचार पत्रों ने इस उपलब्धि की खबर को कैसे कवर किया, इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन VADER सॉफ्टवेयर एनालिसिस जैसे पाठ्य विश्लेषण उपकरणों का उपयोग करके उस युग के समाचार पत्रों में प्रयुक्त शीर्षकों, चित्रों, बयानों और भाषा के चयन के आधार पर दस भारतीय और पश्चिमी

समाचार पत्रों के कवरेज का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रिंट मीडिया के माध्यम से स्वतंत्रता के दौरान औपनिवेशिक आख्यानों और मीडिया से संबंधित है, जो समाज के अभिजात वर्ग के बीच सूचना का प्रमुख स्रोत था।

डॉ. एट अल. (2024) इसलिए, 1858-1919 के वर्षों में भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और सक्रिय किशोरावस्था दोनों देखी गई। संगठित सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की शुरुआत में प्रेस ने बहुत मदद की। इसके अलावा, राजनीतिक जागृति के अग्रदूत जिन्होंने अंततः राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया, वे इसी वर्ग के सदस्य थे। इस अर्थ में, प्रेस, सबसे कुशल जनसंचार माध्यम होने के नाते, राजनीतिक समूहों की स्थापना और उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। संचार और जासूसी के पहले चैनल वे हैं जहाँ प्रेस ने अपनी शुरुआत की। कागज और स्याही के विकास से पहले, समाचार का महत्व अच्छी तरह से पहचाना गया था। चूँकि समाचार एकत्र करना प्रशासन के लिए महत्वपूर्ण था और जनता के लिए सूचना प्राप्त करने का एक तरीका था, इसलिए प्राचीन शासक इसमें रुचि रखते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय प्रेस ने कट्टरपंथी विचारधाराओं के प्रसार के लिए एक माध्यम के रूप में काम किया, सुधारवादी और राष्ट्रवादी विचारों के बढ़ते समूह के विकास में योगदान दिया और कन्या भ्रूण हत्या, विधवापन, बाल विवाह की महंगी प्रणाली, वेश्यावृत्ति, अस्पृश्यता, अंधविश्वास, अधिकारियों के फिजूलखर्ची, कर, ब्रिटिश सरकार और यूरोपीय समुदाय के नस्लीय अहंकार, सेवाओं का भारतीयकरण और विधायिका में भारतीय प्रतिनिधित्व जैसे विषयों पर चर्चा को बनाए रखा। कई पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और जर्नल प्रकाशित हुए। पूरे देश में सामाजिक-धार्मिक, राजनीतिक-आर्थिक और बौद्धिक गतिविधियों का उदय - विशेष रूप से बंगाल और तमिलनाडु में - 18वीं और 19वीं शताब्दियों को उल्लेखनीय बना दिया। आर्थिक जागृति का विचार, जो अंततः देश के औपनिवेशिक शासन के लिए एक चुनौती बन गया, प्रेस के माध्यम से पेश किया गया था। राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए विभिन्न प्रांतों के लोगों को एकजुट करने के लिए, भारतीय राष्ट्रवादियों, विशेष रूप से देश के युवाओं ने एक समय में प्रेस को एक शक्तिशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल किया।

लतीफ़ एट अल (2016) भारत एक विकासशील राष्ट्र है जो निरंतर विकास की भावना के साथ विकसित हो रहा है, जिसमें प्रगति एक अभिन्न अंग है। विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में मीडिया बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से ही मीडिया या प्रेस ने स्वतंत्रता की भावना को जगाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोकतंत्र को आम तौर पर लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए सरकार के रूप में परिभाषित किया जाता है। स्वतंत्रता और लोकतंत्र एक साथ चलते हैं। हम आज ऐसे समाज में रहते हैं जहाँ मीडिया दुनिया को देखने के हमारे नज़रिए में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया आम आदमी और सरकार के बीच एक इंटरफेस के रूप में कार्य करता है। यह लोगों की राय बनाने और बिगाड़ने की क्षमता वाला एक बहुत शक्तिशाली उपकरण है। समाचार पत्र, टेलीविजन और सिनेमा के अपने विभिन्न माध्यमों के माध्यम से मीडिया लोगों के दिल और दिमाग पर राज करता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के समुचित संचालन के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही बहुत ज़रूरी है। एक स्वस्थ लोकतंत्र को आकार देने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लोकतंत्र की रीढ़ है। मीडिया हमें दुनिया भर में हो रही विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों से अवगत कराता है।

## उड़ीसा प्रेस ने असहयोग आंदोलन के स्वदेश आंदोलन और राष्ट्रीय मुख्यधारा के साथ संबंधों को 1900 से 1947 तक आकार दिया

राष्ट्रवाद से पहले के युग में, विद्रोह को छोड़कर, उपनिवेशवाद विरोधी विद्रोह स्थानीय प्रकृति के थे। ब्रिटिश शासन की पहली शताब्दी में, ऐसा कहा जाता है कि चालीस बड़े स्थानीय विद्रोह हुए थे, और कई छोटे भी थे। ये विद्रोह शुरू में बेदखल राजकुमारों और जमींदारों द्वारा और बाद में आदिवासियों और किसानों द्वारा आयोजित किए गए थे। बाद के विद्रोह कठोर प्रशासनिक नियमों और विनियमों और जमींदारों, व्यापारियों और साहकारों द्वारा आर्थिक शोषण के कारण हुए थे। ब्रिटिश शासन की पहली शताब्दी के दौरान उड़ीसा में चार स्थानों पर रुक-रुक कर विद्रोह हुए-परलाखेमुंडी (विद्रोह का नेतृत्व कंध नेता कमल लोचन डोरा बिसोई ने किया था और दूसरे चरण में इसका नेतृत्व उनके भतीजे चक्र बिसोई ने किया था), खुर्दा और संबलपुर। औपनिवेशिक सत्ता को इन प्रत्यक्ष चुनौतियों के अलावा, रियासतों में भी विद्रोह हुए जिनमें सर्वोच्च शक्ति को हस्तक्षेप करना पड़ा इन सभी विद्रोहों में आदिवासियों (परलाखेमुंडी में सबर, घुमसुर और खुर्दा में कंधा और संबलपुर में गोंड) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## असहयोग आंदोलन में उड़ीसा प्रेस की भूमिका

ओडिशा में प्रिंट मीडिया का जन्म ईसाई मिशनरियों के कारण हुआ, जिन्होंने ओडिशा (कटक में) में पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया, जिसे कटक मिशन प्रेस के नाम से जाना जाता है, जहाँ न्यू टेस्टामेंट और अन्य धार्मिक पुस्तकें छापी जाती थीं। हालाँकि, इस समय तक लॉर्ड मैकले की शिक्षा नीति को अपनाने के साथ भारत के अन्य राज्यों में गैर-धार्मिक, सामान्य रुचि और पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन में तेजी से विकास हुआ था। लंबे समय से चली आ रही मांग के बाद ओडिशा को दरबारी भाषा के रूप में अपनाया गया। समय इतिहास बनाता है और इतिहास उन समयों का वृतांत लिखता है जो भावी पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तंभ का काम करते हैं। ऐसे घटनापूर्ण समय लंबे समय से चली आ रही संचयी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप आते हैं, जो कुछ समय के लिए अपनी बाहरी चमक खो चुके प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन भविष्य के लिए अपार संभावनाएं रखते हैं। समय केवल जनमानस की भावना को दर्शाता है, जो वर्षों से संचित अपनी भावनाओं और अपेक्षाओं को व्यक्त करने के लिए एक रास्ता खोजने का लंबे समय से इंतजार कर रहा है। ऐसा ही एक क्षण हमारे राष्ट्र के जीवन में 1921 में असहयोग आंदोलन के नाम से आया था। आंदोलन के महानायक महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय जनता ने भारत में दमनकारी ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ी। गांधीजी ने भारतीय जनमानस की निष्क्रिय और नीरस आत्माओं में एक नई जान फूँकी और सभी असंगत तत्वों को एक सामंजस्यपूर्ण तत्व में बदल दिया। यद्यपि यह असंगत था और इसलिए अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं था, गांधीजी ने एक सामान्य मनो-सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण द्वारा खुद को और अपनी विचारधारा को जनता के बीच लोकप्रिय बनाकर आंदोलन को एक नया आयाम दिया।

जब महात्मा गांधी या बापूजी के नाम से उन्हें प्यार से जाना जाता था, उन्होंने देश भर में सत्याग्रह का झंडा फहराया और गरजते हुए कहा, "हमें अपनी योग्यता से चमकना चाहिए, हमें अपने कार्यों से दुनिया को पहचानना चाहिए। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और दुनिया को अपनी योग्यता दिखानी चाहिए", तो बाहर की दुनिया चकित रह गई। इसने पूरे उपमहाद्वीप के 300 मिलियन लोगों को अपनी गहराई तक जगाने में एक मंत्र की तरह काम

किया। इसने सचमुच उन्हें अपने में समाहित कर लिया और बहा ले गया। कई कवि, प्रेस साहित्यकार, बुद्धिजीवी, पेशेवर और स्वतंत्रता सेनानी आंदोलन की गाड़ी में कूद पड़े और अपनी पहचान को उसमें मिला दिया।

इन परिवर्तनों और विकासों ने न केवल साहित्य के क्षेत्र में नए विचार और विचार लाए, बल्कि समकालीन कवियों और लेखकों को पारंपरिक मानदंडों और रूढ़ियों से ऊपर उठने और स्वतंत्रता को अपने लेखन का मुख्य विषय बनाने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद देशभक्ति और स्वतंत्रता के विषय को प्रेस के माध्यम से सत्यवादी लेखकों के समूह की विविध राजनीतिक रचनाओं में अपनी मजबूत अभिव्यक्ति मिली; जिसका नेतृत्व उड़ीसा में स्वतंत्रता आंदोलन के जनक उत्कलमणि गोपबंधु दास ने किया। इस समूह ने राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन से संबंधित साहित्य पर जबरदस्त प्रभाव डाला।

इस प्रकार वर्ष 1917 में गोपबंधु एक नए नेता के रूप में उभरे, जिन्हें उड़ीसा में कांग्रेस संगठन के चरित्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी, जिसके बीज मधुसूदन दास द्वारा दिखाए गए थे। उन्होंने उड़ीसा में कांग्रेस के विचारों का प्रचार करने के लिए एक व्यवस्थित अभियान शुरू किया और इस बात की वकालत की कि उत्कल यूनिनयन सम्मेलन को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हिस्सा बनना चाहिए।

अपने मासिक सत्यवादी में उन्होंने सम्मेलन की आलोचना करते हुए कहा कि "यह साल में एक बार बंद दरवाजों के पीछे मिलता है और उग्र भाषणबाजी और कागजी प्रस्ताव बनाने में व्यस्त रहता है, लेकिन राजनीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेता"। इससे बहुत पहले ही उड़िया नवसम्बन्ध ने सम्मेलन का उपहास करना शुरू कर दिया था, इसे "धन्यवाद देने वाली संस्था" के रूप में, जिसे कांग्रेस के कार्यक्रम से कोई सरोकार नहीं था। इसने फिर से उड़ीसा की राजनीति की आलोचना करते हुए इसे एक व्यक्ति का शो बताया।

गोपबंधु ने उड़ीसा का तूफानी दौरा करके यह प्रचारित किया कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आगे बढ़ रहा है और इसकी प्रतिक्रिया उड़ीसा में महसूस की जा रही है।

यदि उड़ीसा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मुख्यधारा में शामिल नहीं होता, तो शायद वह अपनी पहचान ही खो देता।

उनके प्रचार के कारण सम्मेलन में दरार पड़ गई। जनवरी 1919 में धीरे-धीरे दरार और बढ़ गई जब मधुसूदन ने उड़िया के संपादक पद से इस्तीफा दे दिया। उनके बाद उनके विश्वस्त अनुयायी ब्रज सुंदर दास ने उत्कल संघ सम्मेलन के सचिव पद से इस्तीफा दे दिया।

गोपबंधु दास ने 19 और 20 अप्रैल को कटक में आयोजित उत्कल संघ सम्मेलन के चौदहवें सत्र की अध्यक्षता की। सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने उड़िया लोगों से कहा कि "यदि उत्कल संघ सम्मेलन का उद्देश्य मानवतावाद को जागृत करना है, तो इसे राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग नहीं रहना चाहिए।"

उन्होंने प्रतिनिधियों और आम जनता से कांग्रेस आंदोलन की प्रबल धारा में शामिल होने का आग्रह करते हुए कहा - संकीर्णता नहीं, बल्कि मानवतावाद ही उड़िया राष्ट्रवाद का लक्ष्य है। इसमें सार्वभौमिक प्रेम और जीवन की परिपूर्णता शामिल है। समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता इसके मूलमंत्र हैं। उड़ीसा संकीर्णता से ग्रस्त नहीं है। यहां एवर को महानदी (महान नदी) कहा जाता है, उसका समुद्र महोदधि (महान समुद्र) है, उसकी इच्छा महेंद्र (महान पर्वत) है, उसका वृक्ष कल्पवृक्ष (इच्छा पूर्ति का वृक्ष) है, उसका भगवान जगन्नाथ (ब्रह्मांड का भगवान) है और उसका श्मशान स्वर्गद्वार

(स्वर्ग का द्वार) है। उड़िया चारों ओर महानता की कल्पना करता है। यह सम्मेलन भारतीय कांग्रेस का हिस्सा है।

## ओरिज़ाबा प्रांत की स्थापना और सविनय अवज्ञा आंदोलन के लिए प्रेस

### सविनय अवज्ञा आंदोलन में उड़ीसा प्रेस की भूमिका

उड़ीसा में प्रेस ने सूचना प्रसारित करके, राष्ट्रवाद को बढ़ावा देकर और जन समर्थन जुटाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रजातंत्र, उत्कल दीपिका और देशकथा जैसे समाचार पत्रों ने इंचुडी में नमक सत्याग्रह सहित आंदोलन की गतिविधियों पर सक्रिय रूप से रिपोर्ट की और ब्रिटिश प्रशासन की आलोचना की, जिससे ब्रिटिश विरोधी भावना और भी बढ़ गई। भूमिगत प्रेस भी उभरी, जिसने स्वतंत्रता सेनानियों को क्रांतिकारी विचारों को साझा करने और गतिविधियों का समन्वय करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

यह अविश्वसनीय है, लेकिन फिर भी मानव इतिहास की एक युगांतरकारी घटना है कि नमक, जो एक मामूली खाद्य पदार्थ था, एक राष्ट्र का गौरव, प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता और आजादी बन गया और भारत जैसे विशाल देश की मुक्ति के पीछे एक शक्तिशाली मंत्र बन गया। वास्तव में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नमक स्वतंत्रता के लिए एक बुत बन गया, जिसने गांवों में रहने वाले लाखों डरपोक लोगों में राष्ट्रवादी भावना पैदा करके उन्हें जगाया। नमक से जुड़े इस दूसरे महान जन आंदोलन ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीयों को अंदर तक झकझोर दिया। हालांकि यह वादा किए गए स्वराज को हासिल नहीं कर सका, लेकिन यह एक दुर्जेय आयाम का जन जागरण ला सका और आम ग्रामीण भारतीयों में स्वतंत्रता के लिए उत्साह को बनाए रखा और फिर से भर दिया।

महात्मा गांधी ने लाहौर में आयोजित अपने वार्षिक अधिवेशन के लिए जवाहरलाल नेहरू को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना था। यह एक महत्वपूर्ण अधिवेशन था क्योंकि यहीं पर कांग्रेस ने अपने लक्ष्य के संबंध में एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था। अपने अध्यक्षीय भाषण में जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम का लक्ष्य 'पुण्य स्वराज्य' होगा। इस घोषणा ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। कांग्रेस कार्यसमिति ने घोषणा की, "हम इसे मनुष्य और ईश्वर के विरुद्ध अपराध मानते हैं कि हम उस शासन के अधीन रहेंगे जिसने हमारे देश पर विपत्ति ला दी है"।

इस तरह की घोषणा कांग्रेस नेताओं द्वारा गांवों और कस्बों में लोगों के सामने पढ़ी जानी थी। इससे भारत की आजादी की लड़ाई में एक नया अध्याय शुरू हुआ। कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए 1930 की शुरुआत से सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का अपना संकल्प घोषित किया।

1924 में गांधीजी ने लिखा था-"असहयोग और सविनय अवज्ञा सत्याग्रह नामक एक ही वृक्ष की दो शाखाएँ हैं। सत्याग्रह सत्य की खोज है और ईश्वर सत्य है। अहिंसा वह प्रकाश है जो मुझे सत्य से परिचित कराता है। मेरे लिए स्वराज सत्य का ही एक हिस्सा है।" कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने और उसका नेतृत्व करने की पूरी जिम्मेदारी महात्मा गांधी पर डाल दी। आंदोलन शुरू करने की तारीख तय करने और विवरण तैयार करने का काम भी उन्हीं पर छोड़ दिया गया।

अंततः महात्मा गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्विवाद नेता के रूप में, 1930 में स्वतंत्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष को

सक्रिय करने के एकमात्र उद्देश्य से राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रसिद्ध ऐतिहासिक आह्वान किया। उन्होंने नमक कानून का उल्लंघन करते हुए नमक का निर्माण करके सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का फैसला किया, क्योंकि उन्हें लगा कि नमक हवा और पानी की तरह जीवन के लिए आवश्यक है और नमक कर गरीब आदमी के दृष्टिकोण से "सबसे अन्यायपूर्ण" था। यह एक शानदार रणनीति थी जिसे भारतीय धरती से ब्रिटिश राज को हटाने की प्रक्रिया को तेज करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय राजनीति को फिर से सक्रिय करने के लिए अच्छी तरह से तैयार किया गया था। महात्मा गांधी ने "कष्टप्रद नमक कानून" को तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। 12 मार्च, 1930 को उन्होंने 78 अनुयायियों के एक समूह के साथ अवैध नमक बनाने के लिए ऐतिहासिक नमक मार्च पर सबनती आश्रम से दांडी समुद्र तट की ओर प्रस्थान किया। दांडी मार्च के दौरान गांधीजी के साथ उड़ीसा का एक युवक मोतीबास दास भी था, जो बालासोर जिले के ईरताल गांव का खादी का छात्र था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने नमक सत्याग्रह की तुलना नेपोलियन के एल्बा से लौटने पर पेरिस तक के मार्च से की। एक अंग्रेजी पत्रकार श्री ब्रेक्सफोर्ड ने प्रसिद्ध दांडी नमक सत्याग्रह को "क्रांति की बालवाड़ी अवस्था" के रूप में वर्णित किया और यह कहकर आंदोलन का उपहास किया कि "समुद्र के पानी को केतली में उबालकर सम्राट को पद से नहीं हटाया जा सकता"। कलकत्ता के स्टेट्समैन ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी की कि गांधी तब तक समुद्र का पानी उबालते रह सकते हैं जब तक कि उन्हें डोमिनियन स्टेट्स नहीं मिल जाता। हालांकि, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने दीवार पर लिखी इबारत को पढ़ने से इनकार कर दिया और कुछ ही समय में इस आंदोलन ने स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय संघर्ष पर एक प्रभावशाली प्रभाव डाला और जल्द ही देश के सभी हिस्सों में नमक सत्याग्रहियों की संख्या बढ़ गई और 1930-31 में यह संख्या 60,000 या उससे भी अधिक हो गई। उस समय के दौरान आंदोलन की लहर उड़ीसा के विभिन्न हिस्सों में भी फैल गई, जिससे राज्य के लोगों में राष्ट्रवादी भावनाओं और देशभक्ति का जोश अभूतपूर्व रूप से बढ़ गया।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन की प्रतिक्रिया

उड़ीसा में 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन की एक दिलचस्प विशेषता यह थी कि प्रेस के सहयोग से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की हिंदू महिलाओं ने इसमें भाग लिया।

नमक सत्याग्रह में महिलाओं की भागीदारी को प्रेरित करते हुए देशकथा ने लिखा - "...महिलाओं का जागरण स्वतंत्रता का सूचक है। हमने महिलाओं को हमेशा दासता की तीव्र स्थिति में रखकर अन्याय और पाप किया है, जिसका हमें इस सत्याग्रह में प्रायश्चित्त करना है।"

22 अप्रैल 1930 को कटक में गोपबंधु चौधरी के निवास पर सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी की योजना बनाने के लिए महिलाओं की एक बैठक आयोजित की गई थी। इस बैठक के बारे में देशकथा ने कहा, "इस बैठक का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह राष्ट्रवादी आंदोलन में महिला कार्यकर्ताओं की संगठित भागीदारी की शुरुआत का प्रतीक है। अच्छे परिवार और उच्च शिक्षा प्राप्त सैकड़ों महिलाएँ अचानक अपने घरों के एकांत से और कुछ मामलों में तो पर्दा प्रथा से बाहर निकलकर कांग्रेस के प्रदर्शनों और नमक निर्माण में शामिल होने के लिए निकल पड़ीं।

दांडी मार्च शुरू होने के कुछ सप्ताह बाद गांधीजी ने कहा: "कुछ

बहनों का अच्छे संघर्ष में शामिल होने की अधीरता मेरे लिए एक स्वस्थ संकेत है। इस अहिंसक युद्ध में, उनका योगदान पुरुषों से कहीं अधिक होना चाहिए। महिलाओं को कमजोर कहना अपमान है। यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है, तो महिलाएँ पुरुषों से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।" इसका प्रभाव चमत्कारी था। महिलाओं के जागरण ने सत्याग्रहियों की ऊर्जा और गतिविधियों को दोगुना कर दिया। जैसे ही इंचुडी में सत्याग्रह शुरू हुआ, रमा देवी, मालती देवी, अन्नपूर्णा देवी और किरण बाला सेन के साथ बालासोर के सत्याग्रह शिविर में पहुँचीं। सैकड़ों महिलाएँ उनके अद्भुत उत्साह और नेतृत्व के प्रभाव में आ गईं। 20 अप्रैल को, उन्होंने महिलाओं के एक लंबे जुलूस का नेतृत्व करते हुए सत्याग्रह केंद्र तक पहुँचकर वहाँ नमक की मिट्टी एकत्र करके नमक कानून का उल्लंघन किया। नमक सत्याग्रह में बड़ी संख्या में महिलाओं की स्वतःस्फूर्त भागीदारी एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने जन-आंदोलन में एक नया जीवन और चमक भर दी।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन का नवीनीकरण

सितंबर 1931 में लंदन में आयोजित दूसरे गोलमेज सम्मेलन में गांधीजी ने भाग लिया। लेकिन उनकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य भारतीय-स्वतंत्रता को पीछे धकेल दिया गया। 28 दिसंबर 1931 को बॉम्बे पहुँचने पर गांधीजी ने देखा कि नए वायसराय लॉर्ड विलिंगडन (1931-36) ने कांग्रेस को कुचलने के लिए दमनकारी उपायों की झड़ी लगा दी थी। जवाहरलाल नेहरू और बादशाह खान जेल में थे और वायसराय ने गांधीजी के साक्षात्कार के अनुरोध को ठुकरा दिया। इससे गांधीजी और कार्यकारिणी के पास सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

फिर से शुरू हुए आंदोलन में कपड़े और शराब की दुकानों पर धरना देना शामिल था। बाजारों को बंद करना और श्वेत या वफ़ादार व्यापारिक प्रतिष्ठानों का बहिष्कार करना, कांग्रेस के झंडे को प्रतीकात्मक रूप से फहराना, अवैध कांग्रेस अधिवेशन को सार्वजनिक रूप से आयोजित करना, नमक सत्याग्रह, चौकीदारी करों का भुगतान न करना और इसी तरह के अन्य आंदोलन शामिल थे। सरकार ने नागरिक स्वतंत्रता को लगभग पूरी तरह से दबाते हुए निर्मम दमन शुरू कर दिया।

गांधीजी के आह्वान पर उड़ीसा में सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से जोर-शोर से शुरू हो गया। नमक सत्याग्रह के फिर से शुरू होने के साथ ही उड़ीसा के नेता नए जोश के साथ आंदोलन में कूद पड़े। कांग्रेस के कार्यकर्ता पुरी में होने वाले कांग्रेस के अगले अधिवेशन के लिए भी काम कर रहे थे। लेकिन सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए और अधिकांश नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। उनमें से अधिकांश को पटना कैप जेल भेज दिया गया। कांग्रेस को गैरकानूनी संगठन घोषित कर दिया गया; प्रेस पर सख्त सेंसरशिप लगा दी गई। समाज और प्रजातंत्र ने कुछ समय के लिए अपना प्रकाशन बंद कर दिया। मुख्यतः इन राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण, उड़ीसा पुरी में होने वाले कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की मेजबानी नहीं कर सका।

4 जनवरी 1932 को गांधीजी को जेल में डाल दिया गया। उनकी गिरफ्तारी के बाद काठजुरी नदी के किनारे अंधेरा होने के बाद प्रदर्शन और सभाएँ जैसी कई गतिविधियाँ हुईं। अधिकारियों की कड़ी निगरानी और उत्पीड़न के बावजूद कुछ कांग्रेस कार्यकर्ता भूमिगत हो गए और सफलतापूर्वक आंदोलन का नेतृत्व किया। दिलचस्प बात यह है कि शक्तिशाली पुलिस सुरेंद्र नाथ दास को गिरफ्तार करने में विफल रही, जिन्होंने बालासोर के पास

फरासिडिंगा (फ्रांसीसी बालासोर) से लंबे समय तक आंदोलन का मार्गदर्शन किया। पुलिस की निगरानी के बावजूद उन्होंने जुलूस निकाला, जिसमें ज्यादातर गांवों से आई महिलाओं ने हिस्सा लिया। इतना ही नहीं, लोकप्रिय उत्साह को बनाए रखने के लिए श्री दास ने 'रानावेरी' जैसे भड़काऊ पर्वे जारी किए और बालासोर में अपने करीबी सहयोगियों की मदद से उन्हें वितरित किया। नीलांबर दास ने लोकप्रिय विद्रोह के लिए किसानों की प्रतिक्रिया जुटाने के लिए उत्तरी बालासोर में गुप्त रूप से काम किया। अथागढ़ क्षेत्र में, बिनोद कानूनगो, सुरेंद्र पटनायक और भ्रमरबर राउत्रे के नेतृत्व में गहन भूमिगत कांग्रेस गतिविधियाँ चल रही थीं। वे क्रांतिकारी बुलेटिन प्रकाशित करने और उन्हें गुप्त रूप से कटक भेजने में व्यस्त थे, ताकि दूधवाले और भिखारियों की मदद से कटक में उनका वितरण हो सके। राधानाथ रथ इसके मुख्य संपादक थे। यह स्पष्ट है कि ये सभी प्रयास जानबूझकर और कुशलता से उन नेताओं द्वारा आयोजित किए गए थे जो अभी भी आज़ाद थे और पृष्ठभूमि में रह रहे थे।

### निष्कर्ष

पश्चिम से ईसाई मिशनरी भारत को दासता और पीड़ा से बाहर निकालने के लिए एक ईश्वरीय आशीर्वाद के रूप में आए। हालाँकि उनका मिशन अपने झुंड में अधिक भेड़ें इकट्ठा करना था, लेकिन अंततः वे गरीबी और बीमारी, अज्ञानता और क्षयकारी रूढ़िवाद से त्रस्त लाखों लोगों के लिए उद्धारकर्ता के रूप में उभरे। इन मिशनरियों की मदद से पश्चिमी शिक्षा प्रदान करने और नए विचारों और मूल्यों को विकसित करने के लिए कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए गए। उन्होंने पश्चिम को जाति से परिचित कराया और इस प्रकार विश्लेषण, संश्लेषण, सद्भाव और स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

अंग्रेजों के आने से पहले उड़ीसा लंबे समय तक अफगान, मुगल और मराठा शासन के अधीन रहा, जब 1568 में अंतिम स्वतंत्र हिंदू राजा मुकुंद देव की मृत्यु हो गई। इन दुष्ट शासकों के हाथों लंबे समय तक दमन, अभाव को अंग्रेजों ने 1803 में उड़ीसा पर कब्जा करने के बाद और भी बदतर बना दिया। दुर्भावनापूर्ण और भाड़े के ब्रिटिश शासन के तहत उड़ीसा को टुकड़ों में विभाजित किया गया था और उन्हें अलग-अलग प्रांतों के उपांग के रूप में टैग किया गया था। इस प्रकार उड़ीसा की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय पहचान खतरे में पड़ गई और दरिद्र हो गई।

### संदर्भ

1. पांडे ब, पांडे श. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लोक मीडिया की भूमिका. 2025।
2. रॉय द. प्रेस और मीडिया की स्वतंत्रता और एक लोकतांत्रिक देश में इसकी भूमिका. 2019।
3. तनेजा व. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रिंट मीडिया में भारतीय स्वतंत्रता पर परिप्रेक्ष्य का अध्ययन. 2024;58:11-20।
4. यादव डॉ. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रिंट मीडिया की भूमिका. Research Journal of Philosophy and Social Sciences. 2024;50:307-313. DOI: 10.31995/rjps.2024v50i02.37।
5. शेरगोजेरी अ, शेरगुप्ते ल. भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका. 2016. ISSN:2454-9827. DOI: 10.5947/2454-9827.2022.00009.14।
6. दास अ. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रकाश में मीडिया विकास: वर्तमान भारतीय संदर्भ में एक अंतर्दृष्टि.

Shodhkosh: Journal of Visual and Performing Arts; 2024, 5.

DOI: 10.29121/shodhkosh.v5.i1NCJCFPC.2024.753।

7. हसन र, हेड. भारत में मीडिया की स्वतंत्रता: एक कानूनी परिप्रेक्ष्य. 2014।
8. चक्रवर्ती ऐ, ससिल प. भारत में प्रेस की स्वतंत्रता का हास: समयरेखा और विचित्र भारतीय मुद्दे. 2020।
9. बालासुब्रमण्यम ए. प्रेस स्वतंत्रता और सीमा रहित रिपोर्ट. 2023. DOI: 10.13140/RG.2.2.13895.16805।
10. श्रीवास स, गुप्ता म. भारत में राष्ट्रीय एकीकरण में मीडिया की भूमिका. 2015;5:388-392।
11. सिंह द व्रत. भारतीय मीडिया. 2018।
12. सेनगुप्ता र, त्यागी म, सेनगुप्ता च. स्वतंत्रता-पूर्व भारत में पत्रकारिता और मीडिया में उपनिवेशवाद विरोधी मोड़: चंपारण, दांडी और धरसाना आंदोलनों के बारे में विदेशी और भारतीय समाचार पत्रों द्वारा समाचार कवरेज ने गांधी को घर-घर में मशहूर कर दिया. Journalism History. 2024;51. DOI: 10.1080/00947679.2024.2414372।
13. असलम ब, गुल डॉ, असगर म. भारतीय कब्जे वाले कश्मीर में स्वतंत्रता आंदोलन पर सोशल मीडिया का प्रभाव. Global Mass Communication Review. 2021;6:274-287. DOI: 10.31703/gmcr.2021(VI-I).21।
14. स्वर्गियारी ख. 2023 में भारत की विश्व प्रेस स्वतंत्रता रैंकिंग. 2023. doi:10.13140/RG.2.2.26823.47527/2।
15. थुसू द, कुमार अ. भारत: दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में पत्रकारिता का मानचित्रण. 2023. DOI: 10.1007/978-3-031-18992-0\_6।

### Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.